आकलन की नई सोच

परीक्षा प्रणाली में सुधार : राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 से कुछ अंश

आजादी के बाद से ही परीक्षा प्रणाली में बदलाव की सिफारिशें सभी नीतिगत दस्तावेज करते रहे हैं। पिछले एक दशक में आकलन संबंधी सोच में महत्त्वपूर्ण बदलाव आए हैं। इस आलेख में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा तैयार दो दस्तावेजों - परीक्षा प्रणाली में सुधार, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 - के आकलन से संबंधित कुछ अंश दिए गए हैं।

राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार-पत्र से कुछ अंश

''औपनिवेशिक काल में विद्यालयी शिक्षा की रचना नौकरशाही के लिए लिपिक (क्लर्क) पैदा करने हेतु की गई थी। जो कुछ पढ़ाया जाता था और परीक्षा के उपरांत जो उपाधि दी जाती थी, वह सामान्यतः एक नियत पाठ्यपुस्तक से पढ़े गए संकीर्णता से परिभाषित विषय-वस्तु का अनुपालन और प्रवीणता थी। प्रश्न करने की प्रवृत्ति खतरनाक थी और औपनिवेशक राज्य के लिए जरूरी दक्षताओं के अलावा अन्य दक्षताओं की शिक्षा गैर-जरूरी थी। 1947 के बाद शिक्षा का विस्तार एक बड़ी जनसंख्या तक हुआ (यद्यपि, दूर-दूर तक और जन-जन तक निश्चित रूप से नहीं) और राष्ट्र-निर्माण तथा औद्योगिक अर्थव्यवस्था दोनों के लिए महसूस की गई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नियत पाठ्यक्रम में आंशिक सुधार किए गए। लेकिन ज्ञान अभी भी दुर्लभ रहा और कुछ उसी तरह से समझा गया। अतः शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य नियत पाठ्यपुस्तकों के द्वारा ज्ञान को प्रदान करना और परीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य इस तरह के ज्ञान-प्रसारण की सफलता का परीक्षण करना रहा।'' (पृ. 3)

''भारत के विशेष संदर्भ में यह कल्पना करना मुश्किल है कि राज्य विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक कौशल रखने वाले नागरिकों के एक बड़े वर्ग के बिना ही गरीबी, पितृसत्ता और जातीय भेदभावों के विरुद्ध बहुत प्रगति कर रहा है। भारत की जटिल सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए ऐसे रचनात्मक दृष्टाओं की आवश्यकता है जो अकेले या सामूहिक रूप से कार्य कर सकें। क्या हमारी शिक्षा और परीक्षा व्यवस्था ऐसे समस्या समाधान करने वाले नागरिकों के निर्माण की दिशा में काम कर रही है?'' (पृ. 5-6)

''एक ऐसी शिक्षा एवं परीक्षा पद्धति आज की जरूरत है जो उन अलाभान्वित वर्ग के लोगों में समस्या निराकरण एवं विश्लेषण क्षमता का विकास करे, जो कि रोजगार उन्मुख बाजार के लिए आवश्यक है। पाठ्यपुस्तक को रटना एवं रटे हुए को उगलना, रोजगार उन्मुख बाजार के लिए आवश्यक दक्षता नहीं है। इस प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा देने वाली परीक्षा पद्धति, रचनात्मकता को समाप्त कर देती है।'' (पृ. 7)

''बिना समझे रटने पर आधारित परीक्षा एवं पठन-तंत्र विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने में असमर्थ हैं। साथ ही उन्हें यह अनुभव कराने में भी असमर्थ रहा है कि यह ज्ञान उनके भविष्य के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। सही अधिगम उसी वातावरण में संभव है, जब लोगों के सामने चुनौती पैदा की जा सके।'' (पृ. 7)

''परीक्षण में अंक देने की सहूलियत और पुस्तकों की सामग्री को प्रधानता दिया जाना, प्रायः दूसरी खामियों को जन्म देती है। वस्तुपरकता पर अत्यधिक जोर खुले अंत वाले प्रश्नों में कमी लाता है जबकि सामग्री इसकी मांग करती है। विद्यार्थी को पाठ्यपुस्तक के कथनों को सिद्ध करने के लिए मजबूर किया जाता है जो कि आसानी से और लाभदायक ढंग से प्रदर्शन योग्य है।'' (पृ. 9)

परीक्षा प्रणाली में अधिक लचीलेपन की आवश्यकता है। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति आवश्यक रूप से निश्चित कर लेता है कि शिक्षा एवं आकलन पद्धतियां सभी सामाजिक वर्गों के प्रति निष्पक्ष हों, ठीक उसी प्रकार हमें निश्चित कर लेना चाहिए कि ये विशेष प्रकार के शिक्षार्थियों के प्रति भेदभाव न करें। अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक तथ्य सूचित करते हैं कि विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थी असमान रूप से सीखते हैं और इसलिए विषयों में एक ही प्रकार की लिखित परीक्षा के द्वारा शिक्षार्थियों का परीक्षण करना उनके लिए अनुचित है, जिनकी वाचिक निपुणता लेखन से ज्यादा अच्छी है या उनके लिए, जो कार्य बहुत धीरे करते हैं, परंतु गहन सूक्ष्मदृष्टि के साथ या उनके लिए, जो अकेले की अपेक्षा समूह में बेहतर कार्य करते हैं।'' (पृ. 12)

''स्मृति परीक्षण से दूर दक्षताओं के परीक्षण पर जोर के रूप में बदलाव निश्चित रूप से तनाव को कम करेगा, साथ ही परीक्षाओं की वैधता बढ़ाने में सहयोग करेगा।'' (पृ. 15)

''हम अनुशंसा करते हैं कि 'अनुत्तीर्ण' शब्द अंकतालिका पर उपस्थित न हो और इसके स्थान पर इन वाक्यांशों का प्रयोग हो जैसे 'असंतोषजनक', अथवा 'बेहतर' है, 'वांछित स्तर की प्राप्ति के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता'। 'अनुत्तीर्ण' शब्द सामाजिक कलंक को दर्शाता है। प्रायः शिक्षण की और पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता जैसी व्यवस्थागत कमियों के लिए विद्यार्थियों को दोषी ठहराया जाता है।'' (पृ. 16)

''सतत एवं व्यापक मूल्याकंन (सी.सी.ई.): समूह ने दृढ़तापूर्वक महसूस किया कि (क) बच्चों पर से दबाव कम करने (ख) मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाने (ग) शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षण का अवसर देने (घ) निदान के लिए साधन उपलब्ध कराने और श्रेष्ठतर योग्यता वाले विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए स्कूल-आधारित मूल्यांकन व्यवस्था स्थापित हो। यह योजना सरल, लचीली और एक संभ्रांत स्कूल से लेकर ग्रामीण या आदिवासी क्षेत्र में स्थित किसी भी प्रकार के स्कूल में लागू करने योग्य हो। योजना के मुख्य सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक स्कूल को अपने शिक्षकों को शामिल करते हुए, उन शिक्षकों द्वारा स्वीकार्य एक उपयुक्त सरल योजना का विकास करना चाहिए।'' (पृ. 22)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 से कुछ अंश

''भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिंता से जुड़ा हुआ है। पाठ्यचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं, अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़ें जमाए मूल्यांकन और परीक्षा तंत्र के अवरोध से नहीं जूझ सकते। हमें परीक्षा के उन दुष्प्रभावों की चिंता है जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सार्थक बनाने और बच्चों के लिए आनंददायी बनाने के प्रयासों पर पड़ते हैं।'' (पृ. 81)

''एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है जिसमें शिक्षार्थी और शिक्षा तंत्र दोनों को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि (फीडबैक) से फायदा हो सकता है।'' (पृ. 81)

''शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए। यह प्रतिपुष्टि इस बात की होती है कि हम ऐसी शिक्षा लागू करने में किस हद तक सफलता प्राप्त कर पाएं।'' (पृ. 81)

''आकलन का प्रायोजन निश्चय ही सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किए गए हैं। यह पुनर्विचार और सुधार इस आधार पर किया जा सकता है कि शिक्षार्थियों की क्षमता किस हद तक विकसित हुई। यह कहने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए कि यहां इस आकलन का मतलब विद्यार्थियों का नियमित परीक्षण कतई नहीं है। बल्कि, दैनिक गतिविधियां और अभ्यास के उपयोग से अधिगम का बहुत ही अच्छा आकलन हो सकता है।'' (पृ. 81)

''प्रगति-पत्र (रिपोर्ट कार्ड) तैयार करने से शिक्षक को अपने प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में यह सोचने का मौका मिलता है कि उसने सत्र के दौरान क्या सीखा और किस क्षेत्र में उसको ज्यादा मेहनत करने की ज़रूरत है। ऐसे रिपोर्ट कार्ड को लिख पाने के लिए शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी के बारे में सोचना होगा और इसीलिए रोज़मर्रा के शिक्षण के दौरान उस पर ध्यान देना होगा। इसके लिए विशिष्ट परीक्षाओं की ज़रूरत नहीं है। स्वयं सीखने वाली गतिविधियां बच्चों में निरंतर चलने वाले अवलोकनात्मक एवं गुणात्मक आकलन का आधार बनती हैं। अवलोकन के आधार पर रोज़ की दैनंदिनी रखने से निरंतर, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में मदद मिलती है। एक शिक्षक की साप्ताहिक डायरी से लिया गया अंश- ''किरण को अपने काम में मज़ा आया। उसको वे किताबें फौरन पसंद आईं जो छोटी थीं और जिनमें जानकारी थी। वह कहता है कि उसे साफ और सादी भाषा पसंद है। तथ्यों को लिखते हुए वह अक्सर संक्षिप्त उत्तर लिखता है। उसका कहना है कि इससे वह चीज़ों को आसानी से समझ पाता है। उसे व्यावहारिक तरीका पसंद है''।'' (पृ. 83)

''पाठ्यचर्या के सभी विषय परीक्षा द्वारा नहीं जांचे जा सकते; बल्कि ऐसा करना तो पाठ्यचर्या के उन क्षेत्रों के सीखने की प्रकृति के विपरीत होगा। इनमें काम, स्वास्थ्य, योग, शारीरिक शिक्षा, संगीत एवं कला शामिल हैं। यद्यपि शारीरिक शिक्षा और योग के कौशल आधारित पक्षों का परीक्षण किया जा सकता है परन्तु स्वास्थ्य से जुड़े पक्षों को सतत और गुणात्मक आकलन की ज़रूरत होती है।'' (पृ. 83)

''जब तक परीक्षाएं बच्चों की पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को याद करने की क्षमताओं का परीक्षण करती रहेंगी, तब तक पाठ्यचर्या को सीखने की तरफ मोड़ने के सभी प्रयास विफल होते रहेंगे। पहला बिंदु यह है कि ज्ञान-आधारित विषय क्षेत्रों में परीक्षाएं ये समझ पाएं कि बच्चों ने क्या सीखा और उस ज्ञान को समस्या सुलझाने और व्यवहार में लाने की उनकी क्षमता को जांच पाएं। इसके अलावा, परीक्षाएं यह भी जांचने में सक्षम होनी चाहिए कि विद्यार्थियों की सोचने की प्रक्रियाएं कैसी हैं तथा यह पता लगा पाएं कि क्या शिक्षार्थी ने यह सीखा कि जानकारी कहां मिलती है, उस जानकारी का इस्तेमाल कैसे करते हैं और उसका विश्लेषण और मूल्यांकन कैसे करते हैं। आकलन के लिए जो प्रश्न निर्धारित किए जाते हैं उन्हें किताब में दी गई जानकारी से आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। कितनी ही बार बच्चों का अधिगम इसलिए बहुत ही सीमित रह जाता है क्योंकि शिक्षक उन उत्तरों को स्वीकार नहीं करते जो कुंजियों में दिए गए उत्तरों से भिन्न होते हैं। ऐसे प्रश्नों को भी इस्तेमाल करना चाहिए जिनका कोई एक उत्तर नहीं होता और जो बच्चों के सामने चुनौती पेश करते हैं। अच्छे प्रश्न और परीक्षा-पत्र बनाना भी एक कला है और शिक्षकों को ऐसे प्रश्न बनाने पर बल देने की ज़रूरत है।'' (पृ. 84)

''आकलन की भूमिका उस प्रगति को समझने की होती है जो शिक्षार्थी और शिक्षक निर्धारित लक्ष्यों की दिशा में करते हैं। और इस प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए उसकी समीक्षा भी करते हैं। प्रतिपुष्टि पाने के ऐसे अवसर हमेशा

उपलब्ध होने चाहिए जो प्रदर्शन को दोहराने व सुधारने की दिशा में ले जाएं, परीक्षाओं व मूल्यांकन के भय का इस्तेमाल किए बिना पढ़ने की दिशा में प्रेरित करें।'' (पृ. 85)

''वस्तुपरकता के लिए यह सरोकार बिलकुल अनुचित है जो प्रतियोगी व्यवस्था से उपजता है और जो बच्चों के परीक्षण में विश्वास रखता है। वस्तुपरकता की दृष्टि से यह सरोकार उस मूल्यांकन के लिए भी अनुचित है जो शैक्षिक लक्ष्यों से सुसंगत हो। न केवल अधिगम के परिणाम बल्कि अधिगम के अनुभवों का भी मूल्यांकन होना चाहिए। शिक्षार्थी बहुत खुशी से अपने अनुभवों की संपूर्णता पर टिप्पणी देते हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तर के ऐसे अभ्यास बनाए जा सकते हैं जिनसे बच्चे अपने अधिगम का आकलन करने और उस पर चिंतन करने में सक्षम हो पाएं। इस तरह के अनुभव उन्हें स्व-नियामन की क्षमताएं भी देते हैं जो 'सीखने के लिए सीखने' की खातिर ज़रूरी होती हैं। ऐसी जानकारी शिक्षक के लिए भी बहुत मूल्यवान प्रतिपुष्टि होती है जिसका उपयोग अधिगम की पूरी व्यवस्था को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।'' (पृ. 85)

''अध्यापन की भूमिका यह है कि वह प्रत्येक बच्चे को उसकी क्षमता के अनुसार सीखने के सर्वश्रेष्ठ मौके दे और इस तरह के अनुभव दे कि जिससे संज्ञानात्मक गुणों का विकास हो, शारीरिक कुशलक्षेम सुनिश्चित हो, खेल-कूद संबंधी गुणों का भी विकास हो और सौंदर्यबोध और भावनात्मकता भी विकसित हो। यह ज़रूरी है कि रपट कार्ड बच्चों और माता-पिता के सामने बच्चों के कई क्षेत्रों में विकास पर एक समावेशी और समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करे। शिक्षक प्रत्येक बच्चे के बारे में ऐसी बातें कह पाएं जो बताएँ कि उस बालक/शिक्षार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दिया गया है, एक सकारात्मक आत्म छवि को मजबूत करती हो और उनके सामने ऐसे व्यक्तिगत उद्देश्य रख पाती हो जिनको लक्ष्य करते हुए वे काम करें। चाहे अंकों की सूचना दी जा रही हो या श्रेणियों की, शिक्षक के द्वारा दिया गुणात्मक कथन आकलन के समर्थन के लिए बहुत ज़रूरी है।'' (पृ. 86)

''शिक्षा प्रत्येक बच्चे का आकलन करे, इसके अलावा प्रत्येक बच्चा स्वयं का भी आकलन कर सकता है और उस स्व-आकलन को रिपोर्ट कार्ड में शामिल करना चाहिए।'' (पृ. 86)। ◆